N.Nosov

निकोलाई नोसोव

THE CRUCIAN CARP

कार्प मछली

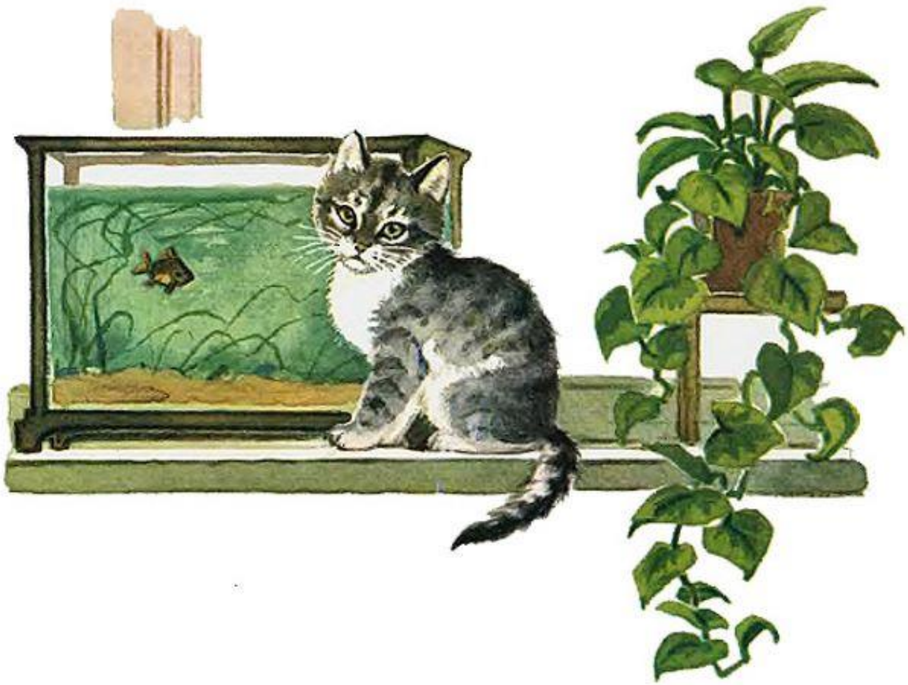


चित्र: एल. ग्लैडनेओवा

हिंदी: अरविन्द गुप्ता

विटालिक की माँ ने उसे एक कार्प मछली और उसको रखने के लिए एक छोटा मछलीघर भेंट किया. वो एक सुंदर छोटी मछली थी. विटालिक उसे पाकर पहले तो बहुत उत्साहित हुआ. उसने उसे रोजाना खाना खिलाया और वो मछलीघर का पानी नियमित रूप से बदलता रहा. लेकिन कुछ समय के बाद उसकी इसमें रुचि खत्म हो गई और कभी-कभी तो वो मछली को खाना खिलाना भी भूल जाता था.

विटालिक के पास एक बिल्ली का बच्चा भी था, जिसका नाम मुर्ज़िक था. बिल्ली के बच्चे की बड़ी हरी आंखें और भूरे रंग का रोएंदार फर था. मुर्ज़िक को मछलीघर में मछली को तैरते हुए देखना बहुत पसंद था. वो घंटों तक मछलीघर के पास कार्प मछली पर आँखें गड़ाए बैठा रहता था.



"बेहतर होगा कि तुम मुर्ज़िक पर अपनी नज़र रखो," विटालिक की माँ ने उसे चेतावनी दी. “नहीं तो वो किसी दिन तुम्हारी मछली खा जाएगी."

"नहीं, वो ऐसा नहीं करेगी," विटालिक ने कहा. "मैं सुनिश्चित करूंगा कि वो ऐसा न करे."

एक दिन जब उसकी माँ बाहर गई हुई थीं तो विटालिक का दोस्त शेरोज़ा उससे मिलने आया. जब उसने मछली देखी तो उसने कहा: "तुम्हारे पास एक अच्छी छोटी सी कार्प मछली है. यदि तुम चाहो तो उसके बदले में मैं तुम्हें एक सीटी दे सकता हूं.“

"मैं सीटी का क्या करूंगा?" विटालिक ने कहा. "मुझे लगता है कि मछली, सीटी से कहीं बेहतर है."

"नहीं, ऐसा नहीं है. तुम सीटी को बजा सकते हैं, लेकिन मछली के साथ तुम कुछ भी नहीं कर सकते हो?"

"तुम मछली को मछलीघर में तैरते हुए देख सकते हो. और वो सीटी बजाने से कहीं अधिक मजेदार है."

"देखो," शेरोज़ा ने कहा. "इसके अलावा, तुम्हारी बिल्ली किसी भी समय उस मछली को खा सकती है और फिर तुम्हारे पास न सीटी बचेगी और न ही मछली. लेकिन बिल्ली मेरी सीटी नहीं खाएगी, क्योंकि वो लोहे की बनी है."

“देखो, मम्मी को यह पसंद नहीं कि मैं अपनी चीजों की अदला-बदली करूं. अगर मुझे एक सीटी चाहिए होगी तो मां मुझे ज़रूर एक सीटी खरीद देंगी.“

"पर उन्हें ऐसी सीटी कहीं नहीं मिलेगी," शेरोज़ा ने कहा. "तुम इस सीटी को किसी दुकान में नहीं खरीद सकते हो. यह एक असली फौजी की सीटी है. जब मैं बाहर अपने यार्ड में जाता हूं और अपनी सीटी बजाता हूं तो हर कोई मुझे एक फौजी समझता है."

शेरोज़ा ने अपनी जेब से एक सीटी निकाली और उसमें ज़ोर से फूंका.

"मुझे भी एक बार बजाने दो," विटालिक ने उससे विनती की.

उसने सीटी ली और बजाई. सीटी ने इतनी ज़ोरदार आवाज़ की कि उसे सुनकर विटालिक मंत्रमुग्ध हो गया. अब विटालिक उस सीटी को अपने पास रखना चाहता था लेकिन साथ में वो अपनी मछली भी नहीं देना चाहता था.

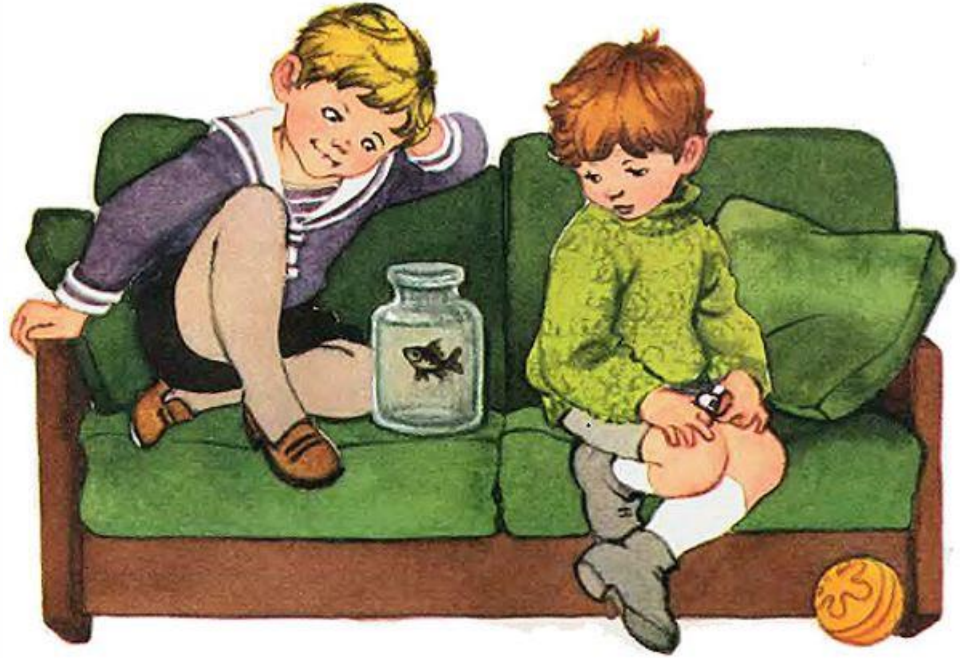
"अगर मैं तुम्हारे साथ अदला-बदली करूं तो भी तुम उस मछली को कहाँ रखोगे? तुम्हारे पास मछलीघर तो है नहीं."

"मैं उसे कांच के एक मर्तबान में रखूंगा. हमारे घर पर एक बड़ा जैम-जार है."

"ठीक है, तुम मेरी मछली ले लो," अंततः हार मानते हुए विटालिक ने कहा.

मछलीघर में से मछली को निकालने में उन्हें काफी कठिनाई हुई. मछली उनके हाथ से लगातार फिसलती रही. आख़िरकार, पूरे फर्श पर पानी फैलाने के बाद शेरोज़ा उसे पकड़ने में कामयाब रहा. इस प्रक्रिया में उसने अपनी आस्तीन की कोहनी तक गीली कर ली.

"मुझे मछली मिल गई!" वो चिल्लाया. "अब तुम जल्दी से मेरे लिए एक मग पानी लाओ."



विटालिक पानी से भरा एक मग लाया और फिर शेरोज़ा ने उसमें मछली डाल दी. फिर दोनों दोस्त शेरोज़ा के यहाँ गए. जैम-जार उतना बड़ा नहीं था जितना शेरोज़ा ने बताया था. मछलीघर की तुलना में इस मर्तबान में मछली के लिए में बहुत कम जगह थी. लड़के खड़े होकर मछली को उस जार में आगे-पीछे तैरते हुए देखते रहे. शेरोज़ा बहुत प्रसन्न था, लेकिन विटालिक थोड़ा दुखी था. उसे खेद था कि उसने अपनी मछली दे दी थी. और सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि वो अपनी माँ को यह बताने से डर रहा था कि उसने एक सीटी के बदले में अपनी मछली की अदला-बदली की थी.



"शायद मां को पता ही नहीं चलेगा कि मछली कहां चली गई है," उसने घर जाते हुए सोचा.

लेकिन जैसे ही वह घर आया तो उसकी माँ ने पूछा: "तुम्हारी मछली कहाँ है?"

विटालिक को समझ नहीं आया कि वो क्या कहे.

"क्या मुर्ज़िक ने उसे खा लिया?"

"मुझे नहीं पता," विटालिक बुदबुदाया.

"देखो," उसकी माँ ने कहा. "बिल्ली ने तब तक इंतजार किया होगा जब तक सब लोग बाहर नहीं चले गए होंगे. फिर उसने मछलीघर में से पानी निकाला होगा और मछली निगल गई होगी. ज़रा चारों ओर बिखरा हुआ पानी तो देखो! दुष्ट बिल्ली! वो कहां है? उसे तुरंत ढूंढो."

"मुर्ज़िक! मुर्ज़िक!" विटालिक चिल्लाया, लेकिन मुर्ज़िक उसे कहीं दिखाई ही नहीं दी.

"वो खिड़की से बाहर कूद गई होगी," उसकी माँ ने कहा. "जाओ, उसे बाहर जाकर देखो."

विटालिक ने अपना कोट पहना और बाहर चला गया.

"हे भगवान, अब मैं क्या करूं?" उसने बहुत दुखी होकर सोचा. "अब मुर्ज़िक को मेरी वजह से सज़ा मिलेगी."

वो वापस जाकर मां से कहने ही वाला था कि वो मुर्ज़िक को कहीं नहीं ढूंढ पाया, तभी मुर्ज़िक खुद तहखाने में जाने वाले खुले छेद से बाहर निकली और दरवाजे की ओर भागी.

"प्रिय मुर्जिक, तुम घर के अंदर मत जाओ," विटालिक ने कहा. "नहीं तो मम्मी तुम्हें कड़ी सज़ा देंगी."



मुर्ज़िक ने घुरघुराहट की और अपना मुंह विटालिक के पैर से रगड़ा और धीरे से मिमियाई.

"क्या तुम्हें समझ में नहीं आया, मूर्ख बिल्ली?" विटालिक ने कहा. "तुम्हें घर के अंदर नहीं जाना चाहिए."

लेकिन मुर्ज़िक ने उसकी एक बात नहीं सुनी. उसने विटालिक की ओर प्यार से देखा, अपने आपको विटालिक के पैरों से रगड़ा और अपने सिर से उसे धीरे से धक्का दिया मानो वो विटालिक से जल्दी से दरवाज़ा खोलने के लिए विनती कर रही हो. विटालिक ने उसे दरवाजे से दूर खींचने की कोशिश की, लेकिन मुर्ज़िक वहीं अड़ी रही. विटालिक ने जल्दी से दरवाज़ा खोला, और वो खुद अंदर चला गया और इससे पहले कि मुर्ज़िक उसके पीछे आती उसने झट से दरवाज़ा बंद कर दिया.

"मियाऊं!" मुर्ज़िक दरवाजे के दूसरी ओर से चिल्लाई.

विटालिक ने अपना सिर बाहर निकाला: "चुप रहो, मूर्ख. अगर मां ने सुना तो तुम्हारी खूब पिटाई लगेगी!"

उसने बिल्ली को उठाया और घर के नीचे तहखाने के छेद में उसे वापस धकेलना शुरू किया. मुर्ज़िक ने चारों पंजों से उसका विरोध किया. वो तहखाने में वापस नहीं जाना चाहती थी.

"अंदर तहखाने में जाओ, मूर्ख," विटालिक बुदबुदाया. "और वहीं रहो."

आख़िरकार वो बिल्ली के बच्चे को छेद के माध्यम से तहखाने में धकेलने में कामयाब रहा, लेकिन बिल्ली की पूंछ अभी भी बाहर निकली हुई थी. पूंछ थोड़ी देर तक गुस्से से हिलती रही, फिर वो भी तहखाने में गायब हो गई. अब विटालिक खुश था: उसने सोचा कि मुर्ज़िक समझ गई थी कि उसे तहखाने में आराम से बैठना चाहिए. लेकिन अगले ही मिनट मुर्ज़िक ने अपना सिर फिर से छेद से बाहर निकाला.



"तुम कहाँ जा रही हो, मूर्ख!" विटालिक फुसफुसाया, और उसने छेद को अपने हाथों से ढक दिया. "क्या मैंने तुमसे नहीं कहा था कि तुम अभी घर के अंदर नहीं जा सकती हो."

"मियाऊं!" मुर्ज़िक चिल्लाई.

विटालिक ने कहा. "बताओ प्रिय, अब मैं तुम्हारे साथ क्या करूं?"

उसने छेद को ढकने के लिए किसी चीज़ की तलाश की. तहखाने के पास ज़मीन पर एक ईंट पड़ी हुई थी. विटालिक ने ईंट उठाई और उसे छेद के सामने खड़ा कर दिया.

"देखो," विटालिक ने कहा. "अब तुम बाहर नहीं निकल सकती हो. तुम थोड़ी देर वहीं रुको. कल तक मम्मी मछली के बारे में सब कुछ भूल जाएंगी और तभी मैं तुम्हें बाहर जाने दूंगा."

विटालिक घर में वापस गया और उसने अपनी माँ से कहा कि उसे मुर्ज़िक कहीं नहीं मिली.

"कोई बात नहीं," मम्मी ने कहा. "वो कभी तो वापस आएगी. मैं उसे उसकी गलती के लिए कभी माफ नहीं करूंगी."

उस दिन रात्रि भोजन के समय विटालिक को बहुत दुःख महसूस हुआ.
वो कुछ भी खाना नहीं चाहता था.

"यहाँ मैं रात का खाना खा रहा हूँ," उसने सोचा, "और बेचारी मुर्ज़िक वहाँ अंधेरे तहखाने में बैठी है."





जब उसकी मां मेज से चली गईं, तो विटालिक ने अपनी प्लेट से अपने हिस्से का मीट उठाया और उसे अपनी जेब में छिपा लिया और फिर तहखाने की ओर भागा. उसने ईंट को एक तरफ सरकाया और धीरे से पुकारा: "मुर्ज़िक! मुर्ज़िक!"

लेकिन मुर्ज़िक ने कोई उत्तर नहीं दिया. विटालिक नीचे झुका और उसने छेद में से झाँका, लेकिन नीचे इतना अंधेरा था कि उसे कुछ भी दिखाई नहीं दिया.

"मुर्ज़िक! मुर्ज़िक!" विटालिक फिर से चिल्लाया. "बाहर आओ, मेरी अच्छी बिल्ली! मैं तुम्हारे लिए एक बढ़िया मीट का टुकड़ा लाया हूँ."

लेकिन मुर्ज़िक हाज़िर नहीं हुई.

"तुम नहीं आओगी? ठीक है, तुम वहां नीचे भूखी सो सकती हो," विटालिक ने कहा और फिर वो गुस्से में घर चला गया.

घर पर मुर्ज़िक के बिना विटालिक को बहुत अकेलापन महसूस होने लगा. इसके अलावा, उसका दिल काफी भारी था क्योंकि उसने अपनी माँ से झूठ बोला था.

माँ ने भी देखा कि विटालिक दुखी लग रहा था.

"कोई बात नहीं तुम खुश हो जाओ," मां ने कहा. "मैं तुम्हारे लिए एक और मछली ले आऊंगी."

"मुझे और मछली नहीं चाहिए," विटालिक ने कहा.

वो अपनी मां को पूरी बात बताना चाहता था लेकिन वो उसका साहस नहीं जुटा पा रहा था, इसलिए उसने कुछ नहीं कहा. तभी खिड़की के बाहर हल्की सी खरोंचने की आवाज आई, और उसके बाद जोर की "मियाऊं!"

विटालिक ने ऊपर देखा. उसने मुर्ज़िक को खिड़की के किनारे पर खड़ा देखा. मुर्ज़िक तहखाने से बाहर कैसे निकली?

"अहा!" विटालिक की माँ चिल्लाई. "वो रही बदमाश! यहाँ आओ, दुष्ट बिल्ली!"

मां ने छोटी खिड़की खोली और मुर्ज़िक अंदर आई. मां ने उसे पकड़ने की कोशिश की, लेकिन बिल्ली को कुछ गड़बड़ होने का अनुमान लग गया क्योंकि वो तुरंत मेज से नीचे कूद गई.

"ओह, चालाक छोटी बिल्ली," विटालिक की माँ चिल्लाईं. "उसे पता है कि वो दोषी है. विटालिक, उसे पकड़ने में मेरी मदद करो."

विटालिक मेज के नीचे रेंग गया. जब मुर्ज़िक ने उसे देखा तो वो छिपने के लिए सोफे के नीचे भाग गई. विटालिक खुश था, और यद्यपि वो ईमानदारी से उसके पीछे रेंगता रहा, उसने खूब शोर मचाया ताकि मुर्ज़िक को भागने का पूरा मौका मिल सके. मुर्ज़िक सोफे के नीचे से उछली और विटालिक कमरे में इधर-उधर उसका पीछा करने लगा.



"इतना शोर मत करो," उसकी माँ ने कहा. "इस तरह तुम उसे कभी नहीं पकड़ पाओगे."

मुर्ज़िक खिड़की की चौखट पर कूद गई जहां खाली मछलीघर खड़ा था. वो खिड़की से वापस कूदने ही वाली थी, लेकिन उसका पैर चूक गया और वो एक बड़े छपाके के साथ मछलीघर में गिर गई!

अगले ही पल बिल्ली खुद को बुरी तरह झटकते हुए बाहर निकली. उसी क्षण माँ ने उसकी गर्दन पकड़ ली.

"अब, मैं तुम्हें एक अच्छा सबक सिखाऊंगी."

"मम्मी, मम्मी! कृपया उसे मत मारो!" विटालिक चिल्लाया और फिर वो फूट-फूट कर रोने लगा.

"देखो, उस पर दया मत करो. देखो उस बिल्ली ने मछली पर दया नहीं की, है ना?"

"उसमें उस बिल्ली का कोई दोष नहीं है, मम्मी."

"फिर, यह क्या? फिर मछली किसने खाई?"

"मछली, बिल्ली ने नहीं खाई."

"तो फिर मछली किसने खाई?"

"वो में था...."

"क्या? तुमने मछली खाई?"

"नहीं, मैंने मछली नहीं खाई. मैंने...मैंने मछली की, एक सीटी के लिए अदला-बदली की."

"किसके लिए?"



"इसके लिए," और फिर विटालिक ने अपनी जेब से सीटी निकाली और अपनी माँ को दिखाई.

"तुम बड़े शरारती लड़के हो, तुम्हें खुद पर शर्म आनी चाहिए."

"असल में मैं वो करना नहीं चाहता था, मम्मी. लेकिन शेरोज़ा ने कहा: 'चलो बदल लेते हैं,' इसलिए मैंने वो किया.' "

"मेरा मतलब था कि तुम्हें सच न बताने के लिए खुद पर शर्म आनी चाहिए. मैंने उसका दोष मुर्ज़िक पर मढ़ा. क्या दूसरों पर दोष मढ़ना अच्छी बात है?"

"मुझे डर था कि आप मुझे डाटेंगी."

"केवल कायर ही सच बोलने से डरते हैं. अगर मैंने मुर्ज़िक को सज़ा दी होती तो तुम्हें कैसा लगता?"

"मैं दोबारा ऐसा फिर कभी नहीं करूंगा."

"ठीक है, बुरा मत मानो. इस बार मैंने तुम्हें माफ कर दिया है क्योंकि तुमने अपनी गलती कबूल कर ली है."

विटालिक ने मुर्ज़िक को उठाया और वो उसे सुखाने के लिए स्टोव के पास ले गया. पूरे शरीर पर गीले फर के चिपके होने के कारण मुर्ज़िक एक बिल्ली से ज्यादा एक कांटेदार साही (हेजहोग) की तरह लग रही थी. वो दुबली-पतली भी लग रही थी, मानो उसने पूरे एक सप्ताह भर खाना न खाया हो. विटालिक को उस पर बहुत अफ़सोस हुआ. उसने अपनी जेब से मीट का टुकड़ा निकाला और उसे मुर्ज़िक के सामने कुर्सी पर रख दिया. मुर्ज़िक ने उसे बड़े चाव से खाया और फिर सूखने के लिए वो कुर्सी पर बैठ गई. थोड़ी देर बाद वो विटालिक की गोद में चढ़ गई और एक गेंद की तरह सिकुड़कर बैठ गई और बड़ी जोर से घुरघुराने लगी. बिल्ली की घुरघुराहट की आवाज़ सुनकर विटालिक ने खुद को बहुत खुश महसूस किया. वो घुरघुराहट ही रही होगी क्योंकि उसके अलावा वहां और कुछ नहीं था?